RNI-DELHIN/2008/9334 के अंतर्गत पंजीकृत

वन्यजीव संरक्षण के लिए मिलाए हाथ

अमेरिकी सरकार और निजी क्षेत्र ने पिछले 25 साल से भी ज्यादा समय के दौरान भारतीय वन्यजीव संरक्षण में मदद की है। वैज्ञानिक एवं प्रबंधन विशेषज्ञता में भागीदारी के अलावा वित्तीय मदद भी मुहैया कराई है। इस सहयोग को और बढ़ाने के लिए राष्ट्रपति जॉर्ज बुश की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों में इस बात पर सहमति बनी कि वे वन्यजीवों के अवैध व्यापार पर रोक लगाने के लिए मिलकर काम करेंगे। उद्यान प्रबंधन तथा इको-टूरिज्म और मनुष्य तथा जानवरों में टकराव के मसले को समझने में सहयोग करेंगे। भारत वन्यजीव तस्करी के खिलाफ गठजोड़ में शामिल होने को रजामंद हो गया है। यह गठजोड़ अमेरिका ने सितंबर 2005 में शुरू किया था। इसका उद्देश्य इस समस्या पर राजनीतिक और सार्वजनिक स्तर पर ध्यान आकर्षित करना और वन्यजीव संरक्षण कानूनों को बेहतर तरीके से लागू करवाना है। अमेरिकी मत्स्य एवं वन्यजीव सेवा (यू.एस. फिश एंड वाइल्डलाइफ सर्विस) ने पश्चिम बंगाल के बक्सा बाघ संरक्षण क्षेत्र तथा असम के मानस नेशनल पार्क में अवैध शिकार रोकने के लिए 400 वन-रक्षकों को विशेष किट उपलब्ध कराने के लिए अनुदान दिया है। अमेरिकी मत्स्य एवं वन्यजीव सेवा ने 2001-03 में कॉर्बेट बाघ संरक्षण क्षेत्र में बाघ तथा मानव के टकराव पर केंद्रित एक शोध योजना के लिए धन उपलब्ध कराया। जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क में एक पर्यटक केंद्र विकसित करने के लिए भी मदद दी गई। बाघ की यह तस्वीर भी 22 नवंबर 2005 को वहीं पर ली गई।

फोटो: **पवन सी. जडका**